जिसने बदली दिशा जगत् की,
धरती और आकाश की ।
जय बोलो ऋषि दयानन्द की,
जय सत्यार्थ प्रकाश की ।।

।। ओ३म् ।।

वर्ष - ६० अंक - ५
मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १००) रु०
आजीवन - १०००) रु०
प्रतिमास ता० १३ को प्रकाशित

आर्य-संसार

वैशाख-ज्येष्ठ : सम्वत् २०७५ वि०   मई – २०१८

डा० वाचस्पतिजी उपाध्याय
(विशेष विवरण पृष्ठ २ पर)

डा० वाचस्पतिजी उपाध्याय

श्री वाचस्पति उपाध्याय जी का जन्म १ जुलाई १९४३ ई० को जिला सुल्तानपुर (उ० प्र०) में झौआरा नामक ग्राम के प्रसिद्ध उपाध्याय परिवार में हुआ था । आपके पिता आचार्य पण्डित रमाकान्तजी शास्त्री आर्यसमाज के प्रतिष्ठित-सुविख्यात पण्डित एवं उपदेशक थे । आपकी माता श्रीमती तपेश्वरी देवी परम सरला, तपस्विनी, कुशल महिला थीं । श्री उपाध्यायजी का परिवार संस्कृत विद्या की दृष्टि से अति विख्यात रहा है । आपके पिताजी आचार्य रमाकान्तजी शास्त्री आर्य समाज कलकत्ता के प्रतिष्ठित विद्वान एवं आचार्य थे । इस प्रकार डा० वाचस्पति को आर्यसमाज के संस्कार जन्म से ही उपलब्ध हो गये थे । डा० उपाध्याय की सम्पूर्ण शिक्षा कलकत्ता में ही हुई । आचार्य रमाकान्तजी ने अपने एकमात्र पुत्र वाचस्पतिजी को स्वामी दयानन्दजी के आदर्शों के अनुकूल एक बुद्धिजीवी आदर्श पण्डित बनाने का प्रयास किया । डा० उपाध्याय की निर्माणस्थली आर्यसमाज कलकत्ता है और इतने सुयोग्य और निष्ठावान् विद्वान के ऊपर किसी भी संस्था को गर्व होना स्वाभाविक है ।

श्री वाचस्पतिजी की शिक्षा आरम्भ से ही कलकत्ता में हुई । आप आरम्भ से ही मेधावी एवं सुयोग्य विद्यार्थी थे । आपने सन् १९६२ ई० में कलकत्ता विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम० ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की । पारिवारिक परम्परा और परिवेश की भूमिका में आपको संस्कृत विद्या में विशेष अभिरुचि रही । १९६६ ई० में आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से ही प्रामाण्यवाद पर शोधग्रन्थ प्रस्तुत करके डी० फिल्० की उपाधि प्राप्त की । १९७० ई० में बनारस से प्राचीन भारत में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध' विषय पर शोधग्रन्थ लिखकर आपने डी० लिट्० की उपाधि प्राप्त की । इस प्रकार डा० वाचस्पति उपाध्याय एम० ए०, डी० फिल्०, डी० लिट्० की उपाधि से अलंकृत होकर संस्कृत विद्वत्मण्डली में विशेष रूप से प्रतिष्ठित हो गये ।

डा० वाचस्पति १९६७ ई० में संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में परीक्षा-अधिकारी एवं कुलसचिव नियुक्त हुए । १९७० से ७५ ई० तक दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के प्राध्यापक रहे । आपने १९७५-७६ ई० में गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में समकुलपति के पद पर कार्य किया । आप १९७६ ई० में पुनः दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्राध्यापक पद पर आ गये । डा० उपाध्याय दिल्ली विश्वविद्यालय के दक्षिण परिसर में प्रोफेसर-इन-चार्ज के पद पर भी प्रतिष्ठित रहे हैं ।

डा० उपाध्याय ने एक अध्यापक के रूप में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की हैं । आपने बीसों छात्रों के डी० फिल्० आदि शोधप्रबन्धों का निर्देशन किया है। डा० उपाध्याय के कई वैदुष्यपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित् हो चुके हैं, जिनमें प्रमुख निम्न प्रकार हैं -

१. मीमांसा दर्शन विमर्श
२. मीमांसार्थ संग्रह
३. धर्मशास्त्र संग्रह (दो भागों में)
४. सेश्वर मीमांसा

इन प्रतिष्ठित प्रकाशनों पर डा० उपाध्याय को विभिन्न संस्थानों ने पुरस्कृत किया है । आपके

शेषांश पृष्ठ २६ पर..

ओ३म्

आर्य-संसार

वर्ष ६० अंक — ५
वैशाख-ज्येष्ठ - २०७५ वि०
दयानन्दाब्द - १९४
सृष्टि सं० - १,९६,०८,५३,११९
मई — २०१८

आद्य सम्पादक
प्रो० उमाकान्त उपाध्याय
(स्मृति शेष)

●

सम्पादक :
श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल

सहयोगी संपादक :
श्रीमती सरोजिनी शुक्ला
श्री सत्यप्रकाश जायसवाल
पं० योगेशराज उपाध्याय

●

शुल्क : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १०० रुपये
आजीवन : १००० रुपये

इस अंक की प्रस्तुति

१. डा० वाचस्पतिजी उपाध्याय		२
२. इस अंक की प्रस्तुति		३
३. यज्ञ से नूतन जन्म (६३)	वेद-वीथिका से	४
४. स्वामी जी का स्वकथित जीवन-चरित्र	-पं० लेखराम द्वारा संकलित	८
५. सत्यार्थ प्रकाश काव्य-सुधा (महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश का काव्यानुवाद)	-पं० देवनारायण तिवारी	१२
६. हमें चेता रही हैं जयन्तियाँ अपने दो महापुरुषों की	-प्रो० ओम कुमार आर्य	१५
७. ये कहाँ आ गए हम	-राजेन्द्र प्रसाद आर्य	१९
९. जन्म-मरण-रहस्य	-पं० देवनारायण तिवारी 'निर्भीक'	२२
९. आर्य समाज सान्ताक्रुज का ७४ वाँ वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह		२५
९. आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ		२७

आर्य समाज कलकत्ता
१९, विधान सरणी, कोलकाता-७०० ००६
दूरभाष : २२४१-३४३९ ***email : aryasamajkolkata@gmail.com***

'आर्य संसार' में प्रकाशित लेखों का उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों पर है ।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा ।

६३

यज्ञ से नूतन जन्म

अस्मात् त्वमधि जातोऽसि, त्वदयं जायतां पुनः ।
असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा ।। यजु० ३५-२२

शब्दार्थ :-

अस्मात्	=	इससे (यजमान से)
त्वम्	=	तुम (यज्ञ)
अधिजातः	=	उत्पन्न हुए हो
असि	=	हो
त्वत्	=	तुमसे
अयम्	=	यह (यजमान)
जायताम्	=	उत्पन्न हो
पुनः	=	फिर से
असौ	=	यह
स्वर्गाय	=	सुख, स्वर्ग के लिए
लोकाय	=	लोक के लिए
स्वाहा	=	हमारी आहुति

भावार्थ :-हे यज्ञाग्नि, संकल्पाग्नि, तुम इस यजमान से उत्पन्न हुए हो और अब यह यजमान तुम्हारे द्वारा पुनः उत्पन्न हो, इसकी आहुति स्वर्ग और लोक सुख के लिए हो ।

विचार विन्दु :

१. यजमान से यज्ञ सम्पन्न होता है। २. यज्ञ से यजमान का निर्माण होता है।
३. यज्ञ स्वर्ग सुखदाता है। ४. यज्ञ लोक सुखदाता है।

व्याख्या

प्रस्तुत मंत्र में एक संदेश दिया गया है, मनुष्य से यज्ञ सम्पन्न होता है और यज्ञ उस मनुष्य का निर्माण करता है । यज्ञ का मुख्य भाव देवपूजा, संगतिकरण और दान होता है । यजमान के हृदय में

श्रद्धा उत्पन्न होती है तो वह यज्ञ करने का संकल्प लेता है। संकल्प उसके कर्त्तव्य की घोषणा है और फिर वह समिधा-काष्ठ, सामग्री, घी आदि एकत्र करता है और फिर यज्ञ में सबको सम्मानपूर्वक आसन देता है, और सब अपने-अपने कर्त्तव्य का यथा-रीति पालन करते हैं। श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं — **'नायं लोकोऽस्त्यज्ञस्य'** - गी० ४-३१

जिसके जीवन में यज्ञ-भाव नहीं होता अर्थात् यज्ञ नहीं होता उसे इस संसार में सफलता नहीं मिलती। महाराणा प्रताप ने, छत्रपति शिवाजी ने, महात्मा गांधी ने राष्ट्र-यज्ञ का संकल्प लिया और राष्ट्र-यज्ञ ने इन महापुरुषों को अमर कर दिया। महाराणा ने घोषणा की कि हम मुगलों से अपना राष्ट्र स्वतंत्र करेंगे। भामाशाह ने अपनी चिर-संचित पूंजी राणा के चरणों में अर्पित कर दी, मुगलों से लड़ने की सेना तैयार हो गई। हल्दीघाटी के युद्ध में जब राणा हजारों मुगल सैनिकों के बीच में घिर गये और असंख्य तलवारें एक ही सिर काटने का प्रयास कर रही थीं, उसी समय झालामन्ना ने अपना घोड़ा दौड़ाया और राणा का मुकुट उठाकर अपने सिर पर रख लिया। शक्तिसिंह ने अपना घोड़ा महाराणा को दे दिया और लड़ाई के अन्तिम चरण में महाराणा ने उदयपुर को जीत लिया। महाराणा ने स्वतंत्रता के युद्ध का यज्ञ रचा और उस स्वतंत्रता के यज्ञ ने महाराणा को भारत के इतिहास में अमर कर दिया। महात्मा गांधी ने अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता का समर-नाद घोषित किया और हजारों लाखों लोग महात्मा गांधी के पीछे चल पड़े —

'चल पड़े जिधर दो डग मग में,

चल पड़े कोटि-पग उसी ओर।'

और गांधी, महात्मा गांधी राष्ट्रपिता बन गये।

मंत्र कहता है कि प्रथम तो यजमान यज्ञ को करता है, फिर यह यज्ञ यजमान का निर्माण कर देता है। यज्ञ भी तीन प्रकार के होते हैं —

(१) सात्विक यज्ञ - जिन यज्ञों में मनुष्य किसी व्यक्तिगत फल की या किसी व्यक्तिगत सुख-सुविधा की आशा नहीं लगाता है, वह यज्ञ सात्विक होता है, परोपकारार्थ, देश और राष्ट्र के हित के लिए, मानव जाति को, प्राणी मात्र को सुख-सुविधा देने के लिए जो यज्ञ किये जाते हैं, वे सात्विक यज्ञ होते हैं।

(२) राजसी यज्ञ - अपने स्वार्थ के लिए, अपने किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए जो यज्ञ किया जाता हैं वह राजसी होता है। महाराज दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया था, युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया था। ये सब स्वार्थ के लिए राजसी यज्ञ होते हैं।

(३) तामसी यज्ञ - किसी के अहित के लिए, शत्रुओं के नाश के लिए जो स्वार्थी यज्ञ किये जाते हैं वे पाप-पूर्ण तामसी यज्ञ होते हैं। मनुष्य को यज्ञ बनाता है। मनुष्य सात्विक-यज्ञ करेगा तो सात्विक बनेगा, राजस यज्ञ से राजसी और तामस-यज्ञ से तामसी बनेगा। यज्ञ मनुष्य का निर्माण करता है। वस्तुतः मनुष्य है ही यज्ञमय —

'क्रतुमयोऽयं पुरुषः'

'यथा क्रतुरस्मिन् लोके पुरुषो भवति' छान्दोग्योप०

अर्थात मनुष्य यज्ञमय है, वह जैसा यज्ञ करेगा वैसा ही बन जायेगा ।

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है —

'सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरो वाच प्रजापतिः'

भगवान् ने मनुष्य को यज्ञ के साथ उत्पन्न किया और मनुष्य को निर्देश दिया कि तुम इसी यज्ञ से अपने जीवन की, अपने समाज और राष्ट्र की उन्नति करो, यह यज्ञ तुम्हारे लिए कामधेनु की तरह तुम्हारे इष्ट को पूर्ण करेगा ।

मंत्र में अन्तिम बात यह कही गई है कि तुम यज्ञ में आहुतियां देते हो, यज्ञ में अपनी मूल्यवान् वस्तुओं का त्याग करते हो, यह यज्ञ तुमको सुख देगा और तुमको लोक-लाभ भी मिलेगा । यह यज्ञमय जीवन का पुरस्कार है कि उसे स्वर्ग का सुख और संसार की प्रतिष्ठा मिलती है ।

यज्ञ से मनुष्य का निर्माण -

मनुष्य जो भी कार्य करता है उस कार्य का प्रभाव मनुष्य के ऊपर अवश्य ही पड़ता है । सत्व, रज और तम, तीन प्रकार के गुण होते हैं । किसी में सत्व गुण की अधिकता होती है, वह सात्विक होता है । जिसमें रजस् गुण की अधिकता होती है, वह राजसी होता है । इसी प्रकार जिसमें तमस गुण की अधिकता होती है, वह तामसी होता है । इस प्रकार मनुष्य की प्रकृति तीन प्रकार की हो जाती है - सात्विक, राजसी और तामसी । जिस व्यक्ति में जिस प्रकार का गुण अधिक होगा, वह उसी प्रकार का कार्य भी करेगा । उसका यज्ञ भी उसी प्रकार का होगा । जिस प्रकार मनुष्य का गुण होगा, उसी प्रकार उसकी श्रद्धा होगी और वह उसी प्रकार का कार्य करेगा । योगेश्वर श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं कि जिस मनुष्य की जैसी श्रद्धा होती है, वह उसी प्रकार का बन जाता है । गीता में लिखा है —

'सत्वानुरूपासर्वस्य श्रद्धा भवति भारत ।
श्रद्धामयोयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः ।।
यजन्ते सात्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः ।
प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः ।।'

गीता - १७-३-४

संक्षेप में इन दोनों श्लोकों का भाव यह हुआ कि जैसी जिसकी प्रकृति होती है वैसी ही उसकी श्रद्धा बन जाती है और जिसकी जैसी श्रद्धा होती है, वह उसी प्रकार से अपने यज्ञ को सम्पन्न करता है । सात्विक प्रकृति के लोग देवयज्ञ करते हैं, राजसी प्रकृति के लोग यक्ष-राक्षसी यज्ञ करते हैं और तामसी प्रकृति के लोग भूत-प्रेतादिकों को पूजते हैं ।

जो जैसा यज्ञ करता है, उसी प्रकार का उसके व्यक्तित्व का निर्माण हो जाता है और धीरे-धीरे मनुष्य अपने उन्हीं गुणों को बढ़ाता चलता है । इस प्रकार व्यक्ति से यज्ञ और यज्ञ से व्यक्ति का निर्माण होता है । व्यक्ति पर यज्ञ का निर्माण निर्भर करता है और यज्ञ पर व्यक्ति का निर्माण निर्भर करता है । यज्ञ से मनुष्य की सुख, समृद्धि, उपलब्धियों में वृद्धि भी होती है । यज्ञ में गृह्य सूत्र का निम्न मंत्र

छः बार पढ़ा जाता है :

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्वचेद्ध बर्द्धय चास्मान् प्रजया
पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ।
इदमग्नये जातवेदसे-इदन्न मम ।।

(आश्व० गृ० सू० १-१०-१२)

इस मंत्र का भाव यह है कि यजमान यज्ञ की अग्नि से यह निवेदन करता है कि ये समिधा, घृत आदि यज्ञ के आत्मा हैं और इनके द्वारा यह यज्ञ बढ़े, विस्तार पावे । साथ ही यह यज्ञ यजमान और यजमान के साथियों को (अस्मान्) वृद्धि प्रदान करे । यजमान फिर कहता है कि हम सबको प्रजाओं से आर्थात् सन्तान से, पशुओं से, अर्थात् भौतिक सम्पत्ति से बढ़ावे । साथ ही हमें ब्रह्म तेज, विद्या, चरित्र, आध्यात्मिक तेज से उन्नत करें । साथ ही यह यज्ञ हमारे लिए अन्न आदि खाद्य, भोग-पदार्थ, धन ऐश्वर्य आदि का निर्माण करे । इस प्रकार यज्ञ से यजमान की बहुमुखी वृद्धि होती है और यजमान के जीवन तथा समृद्धि का निर्माण होता है ।

भजन

हे परमेश्वर सत्, चित, आनंद !

तू विमल, मनोहर, तेजरूप ।
किस ने देखा तेरा स्वरूप ।।
तू सीमाओं में नहीं बंद ।
हे परमेश्वर सत्, चित, आनंद ।।
तू अति विशाल, तू अति महान ।

फिर भी कण कण में विद्यमान ।।
तू बंधन में फिर भी स्वच्छंद ।
हे परमेश्वर सत्, चित,आनंद ।।

तेरी महिमा इतनी अपार ।
क्या गाए उस को गीतकार ।।
असमर्थ शब्द, असमर्थ छंद ।
हे परमेश्वर सत्, चित, आनंद ।।

- विजय 'अरुण'

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जीवन वृत्त

अध्याय–१

पुष्कर के मेले का वृत्तान्त

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म फाल्गुन कृष्ण पक्ष दशमी को गुजरात में सम्वत् १८८१ में हुआ था । पूरे भारतवर्ष में स्वामी जी का जन्म दिवस मनाया जाता है । इसी अवसर पर आर्य समाज कलकत्ता ने निर्णय किया कि पं० लेखराम द्वारा संकलित एवं आर्य महामहोपदेशक कविराज श्री रघुनन्दन सिंह निर्मल द्वारा अनूदित महर्षि स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र धारावाहिक प्रकाशित किया जाय, इसी शृंखला में प्रस्तुत है यह धारावाहिक जीवन-चरित्र — सम्पादक

(गतांक से आगे)

अध्याय - २

गंगा नदी के तट पर सात वर्ष का जीवन

(फाल्गुन शुदी १, सं० १९२३ से स० १९३० तदनुसार १२ मार्च, १८६७ से सन् १८७३ ई० तक)

ठाकुर गोपालसिंह रईस कर्णवास, मखीना व हकीम रामप्रसाद, जो रामो जी के नाम से प्रसिद्ध था, बड़ौली निवासी ने इस घटना का इस प्रकार वर्णन किया 'दशहरे से बीस दिन पहले राव कर्णसिंह यहां कर्णवास में आये और आकर जब स्वामी जी की ख्याति सुनी तो निश्चय मिलने का किया । लोगों ने यही कहा कि यहां एक संन्यासी आया है जो गंगा को नहीं मानता, तीर्थों को नहीं मानता, तिलक का निषेध करता है (प्रसिद्ध हुआ कि एक तिलकचाटा स्वामी आये हैं) । उसने कहा कि हम जायेंगे और वह बीस पच्चीस सेवकों सहित सशस्त्र होकर स्वामी जी के पास गया । जाकर दण्डवत् करके बैठा; वार्तालाप हुआ । उसने कहा कि आप गंगा जी को नहीं मानते । स्वामी जी ने कहा कि जितनी गंगा जी है उतना मानते हैं । उसने कहा कि कितनी है ? स्वामी जी ने कहा कि हम लोगों (संन्यासियों) की तो गंगा जी कमण्डल ही है क्योंकि इसके अतिरिक्त हमारे पास कोई पात्र नहीं है । इस पर उसने कुछ श्लोक गंगा जी की स्तुति के पढ़े । स्वामी जी ने कहा कि यह बात तुम्हारी गप्प है यह केवल पीने का पानी है —इससे मोक्ष नहीं हो सकता; मोक्ष तो कर्मो से होता है; ऐसा तुमको पोपों ने बहका लिया है । चूँकि उसने लम्बे-लम्बे तिलक लगाये हुए थे, इसलिए स्वामी जी ने पूछा तुम क्षत्रिय हो, यह वैरागियों के से लम्बे-लम्बे तिलक क्यों लगाते हो ? उसने कहा कि हमारे स्वामी जी के सामने आपसे बात भी न होगी, उनसे शास्त्रार्थ करो । स्वामी जी ने कहा कि उनको शास्त्रार्थ के लिए बुलाओ और यदि उनमें आने की सामर्थ्य न हो तो उनको लिखो हम वहां चलें ।

इस पर वह बहुत क्रुद्ध हुआ और गाली–गलौज भी की । इससे पहले उसने यह भी कहा था कि हमारे यहां रामलीला होती है, तुम हमारे यहां चलो । स्वामी जी ने कहा कि तुम कैसे क्षत्रिय हो जब कि तुम्हारे सामने वे तुम्हारे पुरुषाओं को नचाते हैं । यदि तुम्हारी बहन-बेटी को कोई नचाये तो कैसा बुरा मानो ! इस पर झगड़ा हो गया और बलदेवदास वैरागी तलवार लेकर उठ खड़ा हुआ । फिर वे चले गये और वहां बरौली में जाकर लीला की परन्तु वर्षा और ओलों के कारण वहां भी इस बार लीला न कर सके । रावण तक भी न जला ।

आततायी का शारीरिक बल से मुकाबला

रास के खंडन से चिढ़कर स्वामी जी का सिर काटने को तैय्यार हो गया—पंडित गोपाल चन्द्र पिचौड़ी, सनाढ्य ब्राह्मण, सैकण्ड क्लर्क सुपरिण्टैण्डैण्ट इंजीनीयर आफिस मेरठ, ने इस घटना को इस प्रकार वर्णन किया कि 'जिन दिनों स्वामी जी केवल एक कौपीन पहनते और बिल्कुल नग्न रहते और गंगातट पर फिरते रहते थे, उन्हीं दिनों मैंने स्थान कर्णवास में दूसरी बार स्वामी जी को देखा । उस समय वह संस्कृत बोलते थे परन्तु मैं संस्कृत न जानता था । वहां हमने यह तमाशा देखा कि रात को राव कर्णसिंह रईस बरौली ने रास कराया, वह चक्रांकित थे । पंडित रात को स्वामी जी के पास (यह कहने) गये कि रास में चलिये । स्वामी जी ने उसका खंडन किया और उसको निन्दनीय कर्म बतलाया और न पधारे । दूसरे दिन सायंकाल के पश्चात् राव साहब अपने सेवकों और पंडितों सहित उनसे इस विषय में शास्त्रार्थ करने को आये । स्वामी जी ने युक्ति और शास्त्र से उसका खंडन किया और मनु का एक वाक्य बोला कि 'पुरुष के वेश में स्त्री को और स्त्री के वेश में पुरुष को देखने का इतना दोष है कि यदि देखे तो चान्द्रायण व्रत करे और इसके अतिरिक्त और युक्ति भी दी कि जब तुम उसको ईश्वर मानते हो तो फिर कैसे उसका लौंडों का स्वांग भर कर गाने बजाने से अपना चित्त प्रसन्न करते हो । जब तुम उसका स्वांग करते हो तो यदि कोई तुम्हारे मां-बाप का भी स्वांग भर कर ऐसा करे तो निश्चित है कि तत्काल (तुम्हें) क्रोध आ जाये ।' यह कहते ही सभा में उपस्थित सब लोग हँस पड़े और राव साहब इस बात पर बहुत लज्जित हुए और कहने लगे कि तुम हमारे इष्टदेव की निन्दा करते हो और उसको बुरा कहते हो । यह कहकर तलवार निकाल स्वामी जी का सिर काटने पर उद्यत हो, उठ खड़े हुए । उस समय स्वामी जी ने कहा कि यदि सत्य कहते हुए सिर ही कटता है तो तुमको अधिकार है कि काट डालो। परन्तु उस समय सत्य का ऐसा दबदबा छा गया उसका हाथ न चला और खड़ा का खड़ा रह गया। उस समय से चक्रांकित लोग स्वामी जी के विरोधी हो गये । यह शब्द भी स्वामी जी ने अवश्य कहे थे कि 'क्षत्रिय या तो शस्त्र निकाले नहीं और यदि निकाले तो जिस संकल्प से निकाले उस संकल्प को पूर्ण करे और जो न कर सके तो उसके क्षत्रियत्व में सन्देह है।' परन्तु वह कुछ न कर सका और अन्त में उसी प्रकार घबराया हुआ अपने साथियों सहित अपने डेरे को चला गया और स्वामी जी अपने आसन से तनिक भी न हिले ।

हम अपने ब्राहाणत्व से क्यों पतित हों - उसके चले जाने के पश्चात् बहुत से लोगों की यह इच्छा हुई कि स्वामी जी इस बात की पुलिस में रिपोर्ट करें और उसके शस्त्र निकालने की जांच हो परन्तु स्वामी जी ने उत्तर दिया कि ' वह अपने क्षत्रियत्व को पूरा न कर सका तो क्या यह आवश्यक है कि हम भी अपने ब्राह्मणत्व से पतित हो जावें ? हमारा सन्तोष करना ही परम धर्म है। और इससे अतिरिक्त, हमको कुछ उससे हानि भी नहीं पहुँची है । उसके लिए इतना लज्जित होना पर्याप्त दंड है; यदि बुद्धमान् होगा तो फिर ऐसा कर्म न करेगा ।' कार्तिक का मेला था, सैकड़ों मनुष्य वहाँ उपस्थित थे, सम्भवत: अक्टूबर या नवम्बर का महीना था ।

आततायी का बल से मुकाबला - राजा उदितनारायण जी, रईस मथुरा, ने इस घटना को इस प्रकार वर्णन किया ' मैंने राव कर्णसिंह साहब और स्वामी जी के झगड़े का वृत्तान्त सुना हुआ है कि राव कर्णसिंह एक बार स्वामी जी के पास गये । राव साहब संस्कृत बोलते थे परन्तु बोल नहीं सकते थे, अशुद्ध बोलते थे । जिस पर स्वामी जी टोकते थे कि अशुद्ध मत बोलो ; जिस चीज को तुम नहीं जानते हो उस पर अधिकार क्यों जताते हो ? परन्तु वह निरर्थक झगड़ा और बेहूदा बातें करता था । जब कोई धार्मिक चर्चा चली तो निरुत्तर होकर और क्रोध में भरकर उसने तलवार निकाली और स्वामी जी को मारने को उद्यत हुआ परन्तु स्वामी जी ने एक बहुत बड़ा पत्थर उठाकर उसकी ओर फेंका, वह पत्थर के प्रहार से बच गया । स्वामी जी ने गरजकर उसके हाथ से तलवार छीन ली और एक हाथ से पृथ्वी को टेक देकर और उसका हाथ पकड़ कर कहा कि क्या तू यह चाहता है कि यह तलवार तेरे ही घुसेड़ दूँ। इस पर उसके होश उड़ गये और स्वामी जी ने तलवार फेंक कर उसको छोड़ दिया । यह स्वामी जी वन को, और वह घर को चला गया और कह गया कि 'मैं तुमसे (अर्थात् स्वामी जी से) समझूँगा ।

ठाकुर शेरसिंह जी कहते ह कि तत्पश्चात् स्वामी जी यहाँ कार्तिक पर्य्यन्त ठहरे और इस अन्तर में स्वामी विशुद्धानन्द और कृष्णानन्द आदि कई संन्यासियों से वेदान्त-विचार और योगाभ्यास के प्रकार पर वार्तालाप होता रहा ।

राव कर्णसिंह फिर आया - क्वार शुक्ल शरत्पूर्णिमा को रईस बरौली कर्णसिंह फिर गंगास्नान को आये । गंगा के तट पर स्वामी जी की कुटी से थोड़ी दूर पश्चिम की ओर बारहदरी पर ठहरे । स्वामी जी को भी यहीं विराजमान सुनकर रात्रि के समय उसने अपने दो सशस्त्र सेवक स्वामी जी को मार डालने के लिए उनकी कुटिया पर भेजे परन्तु दैवयोग से कुछ दिन पहले इस कारण से कि जब स्वामी जी रात को सोते थे तो अपने ओढ़ने के लिए वस्त्र नहीं रखते थे- ठाकुरों ने परस्पर सम्मति करके ठाकुर कैथलसिंह को वहां नियत कर दिया था कि जब स्वामी जी रात को सो जाया करें तो उन पर कम्बल डाल दिया करे क्योंकि स्वामी जी लोगों के चले जाने के पश्चात् जब सोते तो प्रथम तो लोग कम्बल उढ़ा देते परन्तु रात को जब उतर जाता तो स्वामी जी स्वयं न लेते थे ।

पंडित्त भूमित्र जी ने कहा कि उन दिनों मोझबाबा संन्यासी योगेश्वर यहाँ थे जो

पूर्णतया नग्न रहते थे। वृद्धावस्था के कारण उनको आंखों से कम दिखाई देता था। उनकी सेवा में एक वैरागी जमनादास रहता था । उसने एक रात देखा कि स्वामी दयानन्द जी के ऊपर से कम्बल गिरा हुआ है । उसने लोगों से यह बात कही । जिस पर यहां के ठाकुरों ने ठाकुर कैथलसिंह को वहाँ नियत कर दिया कि रात को जब कम्बल उतर जाया करे तो उढ़ा दिया करे ।

राव कर्णसिंह ने एक दिन वैरागियों से कहा कि तुम लोग उसका सिर काट डालो, मैं धन व्यय करके तुम्हें बचा लूँगा और यदि तुम मे से एक आध मर जावेगा तो तुम्हारी कौन -सी लुगाई रोती है परन्तु इस पर भी किसी वैरागी को ऐसा करने का साहस न हुआ ।

क्रमशः ....

विषय- संस्कार विधि पर आधारित दूरदर्शन धारावाहिक लिखवाने का निर्णय

आर्य समाज कलकत्ता ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित संस्कार विधि पर दूरदर्शन के लिये एक धारावाहिक लिखवाने का निर्णय लिया है, जिससे हमारी युवा पीढ़ी को महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताए गए संस्कारों की सही-सही जानकारी हो सके । जो भी विद्धान या विद्धानों का समूह संस्कार विधि पर धारावाहिक लिखने को इच्छुक हैं, वे सभी विद्धान आर्य समाज कलकत्ता से सम्पर्क करें । धारावाहिक में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताए गये सिद्धांतो को मनोरंजक ढंग से दिखाया जाए जिससे यह सभी उम्र के लोंगो के लिये रुचिकर हो । सिद्धांतो से किसी प्रकार का समझौता नहीं होगा । सभी संस्कार विस्तृत रूप में शंका समाधान सहित लिखा जाए । धारावाहिक १०८ कड़ियाँ या इससे अधिक की हो । इस धारावाहिक पर आर्यजगत् के ५ विद्धानों की समिति इसका निर्णय लेगी। सभी विद्वानों को वर्तमान समयानुसार पारिश्रमिक दिया जाएगा। इस धारावाहिक पर आर्य समाज कलकत्ता का सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा । कॉपी राईट भी आर्य समाज कलकत्ता का ही होगा ।

सम्पर्क - दीपक आर्य (मन्त्री) - 8961774940
सुरेश कुमार अग्रवाल - 8240241178
9831847788

भवदीय
आर्य समाज कलकत्ता
दीपक आर्य
मन्त्री

सत्यार्थ प्रकाश काव्य सुधा

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश का काव्यानुवाद

– पं० देवनारायण तिवारी 'निर्भीक'
मो0 : 9830420496

(११)

श्री पं० देवनारायण तिवारी – आर्य समाज के उपदेशक, विद्वान् और कवि हैं, इनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिसमें मर्यादा पुरुषोत्तम, योगेश्वर, एकादशोपनिषद् (काव्य) एवं श्री कृष्ण चरित मानस (रामचरित मानस की भाषा-शैली में) ४ महाकाव्य हैं । पं० जी ने सत्यार्थ प्रकाश का भी छन्दबद्ध भावानुवाद किया है । आर्य समाज कलकत्ता ने इसे आर्य संसार मासिक पत्र में धारावाहिक रूप से प्रकाशित करने का निश्चय किया है ।

यह बारहवीं कड़ी आपके समक्ष है । – सम्पादक

प्रथम समुल्लास (गत अप्रैल अङ्क से आगे)

इन सब गुणों से युक्त है वह, इसलिए वह **''सत्य''** है ।
है स्वयं ज्ञानस्वरूप वह, ब्रह्माण्ड पर अधिपत्य है ॥
इस हेतु प्रभु का नाम **''सत्य''** अरु ज्ञान तथा **''अनन्त''** है
उसमें न कोई दोष है, वह स्वयं सिद्ध अरु सन्त है ॥ १२५ ॥

(डुदाञ्दाने) आङ्० पूर्वक इस धातु से आदि शब्द
और नञ् पूर्वक अनादि शब्द सिद्ध होता है।
यस्मात् पूर्व परंचास्ति स आदिरित्युच्यते । (महाभाष्य १/१/२१)

''न विद्यते आदि कारणं यस्य सोऽनादिरीश्वरः''
छन्द- जिसके न कोई पूर्व औ पश्चात् कोई वस्तु हो ।
कहते उसे हैं **''आदि''** जिसके मध्य में सब अस्तु (हो) ॥
जिसका न कोई आदि कारण हो **''अनादि''** उसे कहें ।
जिसकी व्यवस्था में सभी जन्में तथा उसमें रहें ॥ १२६ ॥

वह शक्ति केवल ब्रह्म है, कहते **''अनादि''** उसे सभी ।
इस हेतु है परमात्मा का एक नाम अनादि भी ॥
(टुनदि समृद्धौ) आङ्० पूर्वक इस धातु से आनन्द शब्द
बनता है ।

आनन्दति सर्वे मुक्ता यस्मिन् यद्वा यः
सर्वाञ्जीवानान्दयति स आनन्दः ।।
छन्द- जो स्वयं है आनन्दघन जिसमें रहें मुक्तात्मा
आनन्द केवल प्राप्त करते मोक्ष में जीवात्मा ।। १२७ ।।

आनन्द युक्त से संयुक्त जीवों को वही करता सदा ।
इस हेतु है **''आनन्द''** उसका नाम यह सुमिरें सदा ।। १२८ ।।

(अस भुवि) इस धातु से **''सत्''** शब्द सिद्ध होता है ।
यदसि त्रिषु कालेषु न बाध्यते तत्सद् ब्रह्म ।।
छन्द- जो हो त्रिकाल अबाध्य, जिसको काल की बाधा न हो ।।
जो पूर्ण ही रहता सदा, जो न्यून या आधान हो ।।
कहते उसे ही **''सत्''** सभी, वह असत् होता है नहीं ।।
इस हेतु उसका ध्यान करिए वह मिलेगा सब कहीं ।। १२९ ।।

(चिति संज्ञाने) इस धातु से ''चित्'' शब्द सिद्ध होता है
''यश्चेतति चेतयति संज्ञापयति सर्वान सज्जनान् योगिनस्तच्चित्परंब्रह्म ।।
छन्द - जो ज्ञान रखता सत्य और असत्य का सब काल है ।
चेतन स्वरूप, समस्त जीवों को करें खुशहाल है ।
सबका चितेश वह चिताता सुपथ हित ही सब समय ।।
उसको किसी भी काल में होता न भय, रहता अभय ।। १३० ।।

इस हेतु उसका नाम है **''चित्''**, वह कभी सोता नहीं ।
सत्, चित् और आनन्दघन है, न्यून जो होता नहीं ।।
यो नित्य ध्रुवोऽचलोऽविनाशी स नित्यः ।।
छन्द - वह ब्रह्म अविनाशी विरज है, और निश्चल है सदा
इस हेतु ईश्वर **''नित्य''** है यह नाम है शुभ सर्वदा ।। १३१ ।।

(शुन्ध शुद्धौ) इससे **''शुद्ध''** शब्द सिद्ध होता है ।
यः शुन्धति सर्वान शोधयति वा स शुद्ध ईश्वरः।।
छन्द - जो स्वयं शुद्ध पवित्र है, सविकार होता है नहीं
सारे विकारों से पृथक् रह, शुद्धि करता सब कहीं

वह शुद्धकर्ता आत्माओं का, सनातन मित्र है ।
इस हेतु कहते ''**शुद्ध**'' उसको, वह सदैव पवित्र है ॥ १३२ ॥

(बुध अवगमने) इस धातु से ''क्त'' प्रत्यय होने से ''**बुध**'' शब्द सिद्ध होता है ।

छन्द- जो बुद्धवान सदा स्वयं, उद्‌बुद्ध करता ज्ञान को ।
ज्ञाता विलक्षण सब समय सबका, हरे अज्ञान को ॥
उसमें न कोई दोष है सबकाल रहता शुद्ध है ।
इस हेतु उस परमात्मा का नाम सुन्दर ''**बुद्ध**'' है ॥ १३३ ॥

(मुच्लृ मोचने) इस धातु से ''**मुक्त**'' शब्द सिद्ध होता है
यो मुञ्चति मोचयति वा मुमुक्षून् स मुक्तो जगदीश्वरः

छन्द- जो सर्वदा सब दोष से है मुक्त, शुद्ध स्वभाव है ।
सबका छुड़ाता क्लेश जो जिसमे दया का भाव है ।
जो चाहते हैं मोक्ष, तजकर प्रकृति भोग अभुक्त हैं ।
लेता शरण उनको सदा, इस हेतु संज्ञा ''**मुक्त**'' है ॥ १३४ ॥

अतएव नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वभावों जगदीश्वरः ।
वह नित्य शुद्ध स्वभाव है निर्लेप, महिमा युक्त है ।
इस हेतु हो इक नाम प्यारा ब्रह्म का शुभ मुक्त है ॥ १३५॥

निर और आङपूर्वक (डुकृञ्करणे) इस धातु से निराकार शब्द सिद्ध होता है । निर्गत आकारात्स निराकारः ॥

छन्द- रहता अदेह सदैव वह, धारण शरीर करे नहीं ।
बह रूप-रंग विहीन है, साकार वह प्रकटे नहीं
रहता अलक्ष अरूप अप्रत्यक्ष बिन सम्भार है ।
इस हेतु उसका नाम प्यारा एक ''**निराकार**'' है ॥ १३६ ॥

(अञ्जू व्यक्तिम्लक्षण कान्ति गतिषु) इस धातु से ''अञ्जन'' शब्द और निर उपसर्ग के योग से ''**निरञ्जन**'' शब्द सिद्ध होता है ॥

क्रमशः ....

हमें चेता रही हैं जयन्तियाँ अपने दो महापुरुषों की

- प्रो० ओमकुमार आर्य, अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता 'जीन्द'

चेतने का, बोध होने का, जागने का कोई न कोई निमित्त होता है। वह निमित्त कभी कोई आकस्मिक घटना, कभी कोई ऐतिहासिक अवसर, कभी किसी का कोई उपदेश, कभी अपना कोई निजी अनुभव बनकर हमारे जीवन में उपस्थित होता है तथा जीवन की दिशा बदल देता है। कितने ही ऐसे निमित्त वैज्ञानिक क्षेत्र में नई खोज, नये अविष्कारों के जनक बने जैसे पेड़ से फल के टूटकर नीचे गिरने की घटना ने महान् वैज्ञानिक न्यूटन को 'गुरुत्वाकर्षण' के सिद्धान्त का खोजकर्त्ता बना दिया तो शिवलिंग पर चढ़ाये गये प्रसाद को चूहों द्वारा खाया जाता देखना बालक मूलशंकर के मन, मस्तिष्क में मूर्ति पूजा के विरुद्ध एक क्रांति का कारण बना। आगे चलकर वही बालक महर्षि दयानन्द के नाम से विश्व इतिहास का महानायक बना, और उन्होंने बहुआयामी नवजागरण का शंखनाद किया। इसका प्रमुख निमित्त शिवरात्रि को घटित उक्त घटना ही तो थी। आर्य समाज को अपनी वर्तमान दशा और दिशा के मद्देनजर चेतने की महती आवश्यकता है।

हमें चेताने के लिये प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी अप्रैल मास में दो ऐतिहासिक तिथियाँ पुनः आ रही हैं जो हमारे दो महापुरुषों की जयन्तियाँ हैं - १९ अप्रैल २०१८ पूज्य महात्मा हंसराज की १५४ वीं जयन्ती, महात्मा हंसराज जिनकी तप, त्याग और 'अवैतनिक सेवा' की चट्टान सदृश सुदृढ़ आधारशिला पर खड़ा हुआ है डी० ए० वी० का भव्य साम्राज्य। और अप्रैल २६, २०१८ है १५४ वीं जयन्ती मुनिवर पं० गुरूदत्त विद्यार्थी की, जिन्होंने अपनी असाधारण प्रतिभा, अतुलनीय तर्कशक्ति, अथाह विद्रता का लोहा पौर्वात्य और पाश्चात्य जगत् में समानरूपेण मनवाया तथा अपनी वाणी एवं लेखनी से विरोधियों के आरोपों का, कुतर्कों का मुँह तोड़ उत्तर देकर वैदिक धर्म का दुंदुभिनाद दिग्दिगन्त में बजाया। इन दोनों जयन्तियों के अवसर पर हम अपने इन दोनों महापुरूषों को श्रद्धापूर्वक स्मरण करें, इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का, इनके ऐतिहासिक योगदान का ध्यानपूर्वक अवलोकन करते हुये इनसे प्रेरणा प्राप्त करके ऐसा संकल्प करें कि हम भी ऋषि के संदेश को वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार को चहुंदिशी फैलाने में कोई कोर कसर नहीं उठा रखेंगे। इन दोनों महान् विभूतियों के विषय में थोड़ा बहुत जानना बहुत आवश्यक है।

महात्मा हंसराज

आइये पहले महात्मा हंसराज के उदात्त चरित की संक्षेपतया झलक देखें। महात्मा हंसराज का जन्म संयुक्त पंजाब के जिला होशियारपुर के समीपवर्ती गांव बजवाड़ा में १९ अप्रैल १८६४ ईस्वी में हुआ था। कहा जाता है कि सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ, सुमधुर गायक बैजू बावरा भी इसी गांव में पैदा हुये थे, सम्भवतः बैजू वारा (बैजू का गांव) ही कालान्तर में बजवाड़ा कहलाया हो। कौन जानता था कि

पिता चुन्नीलाल और माँ गणेश देवी के आंगन का यह नन्हा सा फूल एक दिन अपनी यशोगन्ध से समस्त विश्व को सुगन्धित कर देगा । प्रारंभिक पढ़ाई बजवाड़ा में तदुपरान्त मिडल तक की होशियारपुर में पूरी करके किशोर हंसराज महाविद्यालय की शिक्षा हेतु लाहौर चला गया और उससे आगे का सारा जीवन ही लगभग लाहौर में बीता । उस समय के अविभाजित पंजाब की शैक्षिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र लाहौर ही था । लाहौर में घटित घटनाओं की अनुगूंज सारे भारत में सुनाई पड़ती थी । युवक हंसराज ने सन् १८८६ में पन्जाब विश्व विद्यालय से बी. ए. की परीक्षा बहुत ही अच्छे अंक लेकर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की । इसके बाद आता है वह प्रसंग जिसने युवक हंसराज को त्याग-पथ का प्रशस्त पथिक बनाकर 'महात्मा' की पदवी तक पहुँचा कर महात्मा हंसराज के रूप में समस्त विश्व में प्रसिद्धि दिलवाई ।

संवत् १९४० में दीपावली के दिन (३० अक्टूबर १८८३) महान् क्रांतिकारी, स्वराज्य के उद्घोषक वेदों के पुनरुद्धारक महर्षि दयानन्द ने अमर बलिदान देश-धर्म की बलिवेदी पर दिया तो आर्य जनों ने सर्वसम्मत निर्णय लिया कि ऋषि के महान् व्यक्तित्व और कृतित्व के अनुरूप ही उनका कोई भव्य स्मारक भी होना चाहिये । ऋषि का जीवन ईश्वर और वेद को समर्पित था, वेदों की ओर लौटो 'Back to the Vedas' उनका नारा था, वेदों को पढ़ना, पढ़ाना और सुनना-सुनाना उनके लिये परम धर्म था, अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि उनका लक्ष्य था । इसलिये किसी वेदाधारित शिक्षण-संस्था की स्थापना से ही उनके मन्तव्यों को, सपनों को मूर्तरूप दिया जा सकता है, यही उनकी स्मृति में उपयुक्त स्मारक होगा, ऐसा सबका विचार था । फलस्वरूप सन् १८८६ में लाहौर में प्रथम दयानन्द एंग्लो वैदिक डी.ए. वी. विद्यालय अस्तित्व में आया और उसके प्रथम अवैतनिक, दूसरे शब्दों में जीवन-दानी, मुख्याध्यापक नियुक्त हुये युवक हंसराज जो इस महान् त्याग, तप, वैदिक धर्म और ऋषि के प्रति प्रगाढ एवं अविचल आस्था के कारण महात्मा हंसराज कहलाये और अपने भीषण अवैतनिक सेवा-व्रत के चलते अवैतनिक परम्परा के भीष्म पितामह की संज्ञा से अलंकृत हुये, ऐसा मानना कोई अतिशयोक्ति नहीं है । फिर जब सन् १८८९ में डी.ए.वी. कॉलेज बना तो उसके अवैतनिक प्रिंसिपल भी महात्मा हंसराज ही बने । लगभग २६ वर्ष की ईमानदार सेवा, सच्ची श्रद्धा, कठोर तप, अथक परिश्रम के बलबूते उन्होंने डी.ए. वी. को गगनस्पर्शी ऊंचाइयों तक पहुंचा दिया, डी. ए. वी. और उच्च स्तर एक दूसरे के पर्यायवाची बने तो उनके कारण, डी.ए.वी. को अभूतपूर्व सफलता, प्रामाणिकता और प्रतिष्ठा प्राप्त हुई तो उसका श्रेय भी महात्मा हँसराज के दुग्ध- धवल व्यक्तित्व, शुचि आचरण, समर्पण एवं सेवा- भाव को ही जाता है ।

प्राचार्य पद से पृथक् होकर भी वे सतत् समाज एवं राष्ट्र की सेवा करते रहे । केरल में मालावार का भोपला काण्ड हो, कहीं दुर्भिक्ष पड़ा हो, बाढ़ आई हो, कोई और आपदा का प्रसंग हो, महात्मा हंसराज बढ़चढ़ कर सेवा-कार्य में लगे रहे । किसी भी लेख के लघु कलेवर में उनकी विस्तृत जीवन गाथा को समेटना गागर में सागर भरने जैसा दु:साध्य कार्य है । इतना ही जान लेना पर्याप्त है कि वे

निष्काम कर्मयोगी थे, सादा जीवन उच्च विचार के देहधारी प्रतीक थे, अनासक्त, अलमस्त, फक्कड़, फकीर थे, श्वेत परिधान में संन्यासी थे और १५ नवम्बर १९३८ मृत्यु पर्यन्त आर्य समाज, वैदिक धर्म के उत्थान, प्रचार प्रसार में लगे रहे, ऋषि ऋण से क्या उऋण होने में मनोयोग से प्रयासरत रहे । अन्तिम निष्कर्ष निकालने से पूर्व आइये, मुनिवर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी के जीवन पर भी दृष्टिपात कर लें ।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

पं० गुरुदत्त का जन्म पंजाब के मुलतान नगर में २६ अप्रैल १८६४ को हुआ था और निधन अत्यन्त अल्पायु में (मात्र २६ वर्ष) १९ मार्च १८९० को हुआ था । पं० गुरुदत्त विश्व इतिहास में ऐसा जाज्वल्यमान् हस्ताक्षर है कि उन जैसी असाधारण प्रतिभा, मेधा-बुद्धि, तर्कशक्ति तथा वैज्ञानिक दृष्टि की मिसाल अन्यत्र मिलनी दुर्लभ है । किशोरावस्था तक पहुंचते-पहुंचते दर्जनों भाषाओं तथा अनेक विषयों यथा - इतिहास, दर्शनशास्त्र, भाषाविज्ञान, धर्मशास्त्र, विज्ञान आदि पर उनको पर्याप्त अधिकार प्राप्त हो गया था । वे आर्य समाज के सजग प्रहरी थे । आर्य समाज के विरुद्ध किये गये भ्रामक दुष्प्रचार लगाये गये अनर्गल आक्षेप एवं आरोपों का उन्होंने अपनी वाणी एवं लेखनी से मुँहतोड़ उत्तर देकर विरोधियों की बोलती बन्द कर दी तथा वैदिक धर्म की श्रेष्ठता एवं वैज्ञानिकता की छाप अन्य मतावलम्बियों पर छोड़ी । वे अपने श्रद्धेय गुरुवर महर्षि दयानन्द से सन् १८८३ में तब मिले थे जब ऋषिवर मृत्युशैय्या पर थे उनकी झलक मात्र ने नास्तिक गुरुदत्त को आस्तिक गुरुदत्त में परिवर्तित करके आर्य समाज को एक ऐसा हीरा प्रदान कर दिया जिसकी दिव्य आभा से इतिहास के पन्ने सदा जगमगाते रहेंगे । वे अनन्य ईश्वर भक्त, वेद भक्त तथा ऋषि भक्त थे । सत्यार्थ प्रकाश को वे एक अनमोल ग्रन्थ, ज्ञान का महासागर पाखण्ड-दुर्ग को ध्वस्त करने वाला अचूक अस्त्र मानते थे । बड़े गर्व से कहा करते थे कि मैंने दर्जनों बार इस ग्रन्थ-रत्न का अध्ययन एवं अवगाहन किया है और हर बार कोई न कोई नई चीज, नई दृष्टि, नया विचार मुझे मिला है । यदि मुझे अपनी समस्त चल-अचल संपत्ति देकर भी सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति क्रय करनी पड़ जाये तो मै सहर्ष करूंगा और बहुत सस्ते में मिल गई यह समझूंगा । आज हम अपने को देखें कि उनकी तुलना में हम कहाँ खड़े हैं, क्या ऋषि के अनुयायी कहलाने की पात्रता हममें है या मात्र दिखावा कर रहें हैं ।

पं० गुरुदत्त ने आर्य समाज की सेवा हेतु अपना सर्वस्व दांव पर लगा दिया, आराम, नींद, भूख, प्यास सब कुछ भुला कर बस एक ही धुन में पागल हुये रहे कि ऋषि मिशन को आगे ही आगे बढ़ाऊँ अपने इस लघु से जीवन में ऋषि को जीने का सपना साकार करूँ । पुस्तकें लिखीं, लेख लिखे, वैदिक शब्दावली की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की । इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि उनकी लिखी छोटी सी पुस्तक 'Terminology of the Vedas' उस समय ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के बी.ए.के पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाती थी । उनका किया हुआ ईश, मुण्डक, माण्डूक्य का भाष्य विदेश में छपा था । उन्होंने मित्र, वरुण, अग्नि, रुद्र, वृत्र, इन्द्र आदि यौगिक शब्दों की जो वैज्ञानिक व्याख्या की थी उसे पढ़कर पाश्चात्य विद्वान् भी स्तब्ध रह गये थे । प्रो० मैक्समूलर, मोनियर विलियम्स, टी० विलियम, फादर पिन्कॉट आदि

उनकी विद्वता से प्रभावित थे । इस प्रकार अपने सर्वस्व को आहुति देकर पं० गुरुदत्त ने अपने धुँआधार लेखन-कार्य और व्याख्यानादि से वेद और वैदिक मान्यताओं का लोहा विश्व के विद्वानों से मनवाया, वैदिक ज्ञान विज्ञान की धाक बिठा दी । कार्याधिक के कारण उनके स्वास्थ्य पर बेहद कुप्रभाव पड़ा, स्वास्थ्य एक बार बिगड़ा तो बिगड़ता चला गया और अंततः १९ मार्च १८९० में यह अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न, महान् मेधावी वैज्ञानिक विद्वान् , ऋषि का अनन्य भक्त गुरूदत्त संसार से विदा हो गया। उनके विषय में यह कहना सर्वथा उचित ही होगा -

आर्य समाज हेतु ईश्वरीय वरदान थे गुरुदत्त, विवेक, विद्वता, पाण्डित्य की खान थे गुरुदत्त । दुन्दुभिनाद वेदों का चहुँ ओर गुञ्जा गये, आर्यजगत् की आन,बान, शान थे गुरुदत्त । तथा-

सूर्य चन्द्र का चक्र तो नित्य यहाँ चलता है
हर पेड़ बहारों में हर साल फूलता फलता है
इतिहास के गर्भ में किंतु समा जाती हैं सदियाँ
तब जाकर कहीं एक गुरुदत्त मिला करता है ।

अब यह तो हुआ अपने दो महापुरुषों के जीवनवृत्त का संक्षेप में लेखा-जोखा । अपने मूल विषय पर लौटे और देखें कि इनकी जयन्तियाँ हममें कोई नई प्रेरणा, नई स्फूर्ति, अपने ऋषि के प्रति श्रद्धा, वेद प्रचार हेतु उत्साहादि पैदा कर सकेंगी अथवा हम यूँ ही निश्चेष्ट और निश्चेतन बने रहेंगे ? अपने क्षुद्र स्वाथा के मकड़जाल में उलझे रहेंगे या बाहर निकल कर आर्य समाज का हित भी देखेंगे । यह भी साहस करना होगा कि आपसी फूट और विवादों में उलझकर समय, शक्ति और धन की जो बेहिसाब बरबादी हम कर चुके हैं अब भी कर रहे हैं उस पर विराम लगाना होगा । अन्य राजनैतिक पार्टियों के आश्रित होकर उनके ही भरण, पोषण में लगे रहेगें या अपने पैरों पर खड़े होकर राजनीति में अपनी अलग पहचान बनाने की भी कभी सोचेंगे ? विद्यार्य सभा, धर्मार्य सभा आदि भी वर्तमान में कोई अच्छी स्थिति में नहीं हैं उनकी दशा सुधारने की भी महती आवश्यकता है । यदि हम पाक साफ नीयत और दृढ संकल्प के साथ आगे बढ़े तो कहा जायेगा कि हम चेत गये हैं, जाग रहे हैं अन्यथा जयन्तियाँ हों, बोधोत्सव हो, बलिदान पर्व हो कुछ भी हो मात्र तिथियाँ रहेंगी, मनाने न मनाने से कोई विशेष अन्तर नहीं आने वाला । ईश्वर हमें सद्बुद्धि दे, हम अपना कर्त्तव्य पहचानें अपने महापुरुषों के ऋण से उऋण होवें ।

सम्पर्क सूत्र
जवाहर नगर पटियाला चौक,
जीन्द (हरियाणा)
मो० - 9416294347
01681-226147

ये कहाँ आ गए हम

- राजेन्द्र प्रसाद आर्य

२ फरवरी १८३५ को एक ब्रिटिश सांसद लार्ड मेकाले ने ब्रिटिश संसद में एक वक्तव्य दिया था जो इस प्रकार है................

मैने पूरे भारतवर्ष में चारों ओर भ्रमण किया है और अपने इस भ्रमण काल के दौरान हमने एक भी व्यक्ति ऐसा देखा नहीं जो भिखारी अथवा चोर हो, इस देश में इतनी सम्पदा है, और लोगों का चरित्र इतना ऊँचा है और लोगों में इतनी योग्यता है कि मैं नहीं समझता कि इन्हें गुलाम बनायें रखा जा सकता है, जबतक कि इस देश की रीढ़ की हड्डी को तोड़ नहीं दिया जाय, जो इस देश की आध्यात्मिक व पैतृक सम्पत्ति है और इसलिए मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि इनकी प्राचीन शिक्षा प्रणाली एवं इनकी संस्कृति को बदल दें ताकि वे सोचने लगे कि जो कुछ विदेशी है वह हमसे अधिक महान है। इस प्रकार वे अपना स्वाभाविक संस्कृति और स्वाभिमान को खो देंगे और सचमुच हमारी इच्छानुसार हमारे गुलाम बने रहेगें ।

आज सचमुच हमारा स्वाभिमान और हमारी वैदिक संस्कृति को नष्ट कर हमारी रीढ़ की हड्डी को तोड़ डाला गया है, अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति में वे बहुत पहले से कार्यरत थे । १७६० ई० में एक अंग्रेज अफसर लार्ड क्लाइव ने कलकत्ता में गायों की हत्या हेतु एक कत्लखाना खुलवाया, जबकि मुगल शासन काल में भी इस देश में गो हत्या नहीं होती थी । इस एक कत्लखाने से बढ़कर अंग्रेजो के शासनकाल में ३०० कत्लखाने खुल गए और आज जब अपनी सरकार है तो इस समय इस देश में लगभग ३०००० कत्लखाने है। एक आकलन के मुताबिक भारत में प्रतिवर्ष लगभग १ करोड़ गायों की हत्या की जा रहीं है । भारतवर्ष इस समय एक प्रमुख गौ मांस निर्यातक देश बनकर ढेरों विदेशी मुद्रायें अर्जित कर रहा है।

इतना ही नहीं राबर्ट क्लाइव ने हमारा नैतिक पतन के उद्येश्य से पहली बार कलकत्ता में ही एक विदेशी शराब की दुकान खुलवाया । इसके पहले अंग्रेज ही सिर्फ अपने लिए इसे बाहर से मँगवाते थे । इस समय इस देश में लगभग ३-४ लाख अंग्रेजी शराब की दुकानें है जिससें करोड़ों लोग शराब पीकर अपना जीवन एवं जवानी दोनो ही बर्बाद कर रहें है। इस शराब के चक्कर में लाखों घर बर्बाद हो चुके हैं । एक आकलन के मुताबिक इस देश में प्रतिवर्ष १ लाख ४० हजार लोग सड़क दुर्घटनाओं से मारे जाते हैं जिसका मुख्य कारण होता है शराब ।

अंग्रेजों ने हमारी नैतिक पतन के खातिर एक काम और किया और वह है कलकत्ता में ही एक वेश्यालय की स्थापना की और जबरन ३०० महिलाओं को इस घृणित कार्य में धकेला । आज वेश्यावृत्ति का स्वरूप इतना विशाल हो गया है कि इस देश के प्राय: सभी शहर वेश्याओं की मंडी से पट गए है । आज लाखों की संख्या में ये वेश्याएँ लोगों को यौन रोगी बनाकर असमय ही मृत्यु की ओर धकेल रही हैं ।

कहने को तो हम आज स्वतंत्र हैं, स्वतंत्र का मतलब होता है । स्व: तंत्र अर्थात अपना तंत्र मगर यहाँ अपना कुछ भी नहीं है सब विदेशी है । आज हमें स्वतंत्र हुए ७० साल हो चुके है पर हम अपनी

चीजें नही ला सकें है । अस्पताल हमारे हैं, डॉक्टर भी हमारे हैं पर दवा विदेशी है । कोर्ट हमारे, जज भी हमारे ही हैं पर कानून विदेशी है जहाँ फैसले तो होते हैं मगर न्याय नहीं होता है । इसी प्रकार विद्यालय हमारे है, शिक्षक भी हमारे हैं पर शिक्षा प्रणाली वही लार्ड मेकाले की विदेशी है ।

और सबसे ज्यादा हमारी संस्कृति को बर्बाद किया है वही लार्ड मेकाले की शिक्षा पद्धति, इसी का परिणाम है कि बेटा बाप को आज बाप नहीं समझता । बेटा आज बाप को डैडी और फिर डैड कहता है उसी प्रकार माता को माँ नहीं मम्मी और फिर मम कहता है । माता और पिता शब्द में जो आत्मीयता है व मम और डैड में कहाँ । इस शिक्षा प्रणाली का ही परिणाम है कि आज परिवार टूट रहा है, रिश्ते नाते बिखर रहे हैं ।

आज किसी महिला को बहन जी या श्रीमती जी के सम्बोधन से अधिक प्रिय लगता है मैडम के सम्बोधन से इसी प्रकार पुरूष महाशय ही के सम्बोधन से प्रिय लगता है सर के सम्बोधन से, अभिवादन का स्वरूप भी बिल्कुल बदल गया है।

पाश्चात्य संस्कृति के चकाचौंध में उसी का नकल करके आज युवतियाँ मर्यादा को ताक पर रखकर फैशन के नाम पर उत्तेजक और भड़काऊ कपड़े पहनकर अपने को अधिक माडर्न समझती हैं। इन्हें भारतीय संस्कृति की परिचायक शालीनता का प्रतीक पारंपरिक परिधान साड़ी रास नहीं आता है। दुपट्टे की तो आवश्यकता ही नहीं रह गया है । स्कर्ट की लम्बाई भी दिन- प्रतिदिन घटती जा रही है। यह सब इस ओर इशारा करती है आखिर कहाँ आ गए हम। इसी प्रकार विदेशी तर्ज पर कला के नाम पर खुलेआम अश्लीलता का प्रदर्शन हो रहा है, टी० . वी० . चैनल और सिनेमा ने पूरे समाज का वातावरण ही अत्यंत बिषैला बना दिया है ।

आज हमारे युवा वर्ग में लव का नशा भी प्रत्येक घर तक पहुँच गया है जिसकी खबरों से अखबार का पन्नां भरा रहता है। लव का दुष्परिणाम जानना हो तो उन हजारों कुवारी माँओं से पूछिए जिसने कभी लव किया था, लव के चक्कर में ही आज हजारों हजार युवतियाँ डाईवोर्स लेकर परित्यक्ता का जीवन जी रही है, और असफल प्रेम के चक्कर में हजारों हजार युवतियां अपने प्राण गवाँ चुकी है, यह लव और डाईवोर्स भी तो विदेशियों की देन हैं हमारी संस्कृति में तो जीवन पर्यन्त साथ निभानें का नाम है प्रेम बंधन ।

अत: मैं यह कहना चाहूँगा कि इस लेख को लिखने का हमारा उद्येश्य मात्र इतना है कि विदेशी संस्कृति के फैलते इस नेटवर्क को उखाड़ फेंकने के लिए केवल एक ही रास्ता है कि पूरे देश में गुरूकुलीय शिक्षा का जाल फैलाकर बच्चों को हम शिक्षित ही नहीं दीक्षित भी करें ।

इस कार्य के लिए सरकार तो नहीं पर स्वामी रामदेव ने बीड़ा उठाया है, उन्होने संकल्प किया है कि इस देश के प्रत्येक जिला में एक आचार्यकुलम (गुरूकुल) खोला जाएगा । जिसमें आधुनिक शिक्षा के साथ ही वेद, शास्त्र इत्यादिं ग्रन्थों का ज्ञान दिया जाएगा । स्वामी रामदेव का यह प्रयास स्वागत योग्य है क्योंकि इससे इस देश की दशा और दिशा बदलने वाली है ।

राजेद्र प्रसाद आर्य
प्रचार मंत्री, आर्यसमाज
मुजफ्फरपुर

वैदिक संसार एक लाख पन्द्रह हजार की राशि से किया गया सम्मानित

विगत ६ वषो से अनवरत् प्रत्येक माह इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित मासिक पत्रिका वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा को आर्य जगत् में उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन तथा वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान हेतु ठाकुर विक्रमसिंह ट्रस्ट, दिल्ली तथा राष्ट्र निर्माण पार्टी के प्रमुख दानवीर राजर्षि ठाकुर विक्रमसिंह जी द्वारा शाल, प्रशस्ति पत्र तथा एक लाख रुपये का चेक प्रदान कर सम्मानित किया गया ।

वैदिक संसार पत्रिका के सम्पादक गजेश शास्त्री, सुखदेव शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा तथा सुपुत्री कु. भाग्यश्री शर्मा को भी सहयोगी कार्यकर्ता के रूप में पृथक-पृथक शाल, प्रशस्ति पत्र तथा पाँच-पाँच हजार के चेक प्रदान कर सम्मानित किया गया ।

सुखदेव शर्मा ने इस सम्मान को अपना व्यक्तिगत सम्मान नहीं बताते हुए वैदिक धर्म संस्कृति के उच्चतम् मूल्यों और देव दयानन्द का सम्मान बताया जिन्होंने विष पीकर हमें वेदों का अमृत पान करवाया ।

वैदिक संसार परिवार ठाकुर विक्रमसिंह जी का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करते हुए उनके स्वस्थ, दीर्घायुष्य, यशस्वी जीवन की कामना करता है ।

पृष्ठ २६ का शेषांश.....

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने सन् २००० ई० में प्रो० उपाध्याय को **'महामहोपाध्याय'** की उपाधि से सम्मानित किया । आपको **'विद्वद्भास्कर'** एवं **'ज्ञाननिधि'** सम्मान से सम्मानित किया गया। उ० प्र० संस्कृत अकादमी, लखनऊ से संस्कृत साहित्य पुरस्कार, आचार्य उमास्वामी पुरस्कार, राष्ट्रपति पुरस्कार आदि अनेक पुरस्कारों से आप विभूषित किये गये ।

आपने संस्कृत की सेवा में समर्पित अपने जीवन काल में निदेशक राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, सचिव-महर्षि सन्दीपनी राष्ट्रीय वेदाविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन, सचिव-युनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन, एवम् भारतीय विश्वविद्यालय संघ के अध्यक्ष आदि कई पदों को निष्ठा और उत्कृष्टता से संभाला ।

कुलपति के रूप में १७ वषा के सुदीर्घ और विशिष्ट सेवाकाल के दौरान ही भारत सरकार प्रो० उपाध्याय को उत्तर भारत के किसी प्रमुख राज्य का राज्यपाल घोषित करने की तैयारी कर रही थी । किन्तु विधि की व्यवस्था के अधीन, ११जुलाई, २०११ ई० को माँ भारती का लाल, संस्कृत का उपासक और सेवक यह महामानव अपनी अनन्तयात्रा पर चला गया । कृतज्ञ विद्यार्थी और विश्वविद्यालय, संस्कृत जगत, आर्य जगत और आर्य समाज कलकत्ता इस असामयिक अपूरणीय क्षति से स्तब्ध रह गये ।

यत्रापि कुत्रापि गता भवन्ति, हंसा महीमण्डल भण्डनाय ।
हानिस्तु तेषां हि सरोवराणाम्, येषां मशलैः सहविप्रयोगः ॥

जन्म-मरण-रहस्य

- पं० देवनारायण तिवारी 'निभाक'
मो० - ९८३०४२०४९६

छांदोग्य उपनिषद् पंचम प्रपाठक की कथा-

एकबार गौतम आरुणि का पुत्र श्वेतकेतु पाञ्चाल देश क्षत्रिय राजा जैवलि प्रवाहण की सभा में आया। अर्घ्य-पाद्य के उपरान्त श्वेतकेतु से राजा ने पूछा- १. क्या तुम्हें ज्ञात है कि मरने के बाद मनुष्य का आत्मा कहाँ जाता है ? २. फिर लौटकर कैसे आता है ? ३. क्या तुम्हें मालुम है कि देवयान (मोक्ष का मार्ग) और पितृयान (पुनर्जन्म का मार्ग) कहाँ से अलग-अलग होता ? ४. प्राणियों के मरणोपरान्त (बराबर मरते रहने पर भी) वह लोक भर क्यों नहीं जाता ? ५. और यह बताओ कि जल की पांचवी आहुति में जाकर किस प्रकार पुरुष (जीवात्मा) मनुष्य बनकर बोलने लगता है ? उत्तर में श्वेतकेतु ने कहा कि महाराज मैं किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं जानता, और निराश होकर लौट आया। सारी बातें अपने पिता को बतलाया। फिर श्वेतकेतु का पिता गौतम अपने पुत्र के साथ राजा के पास गये और उनसे बोले कि महाराज जो प्रश्न आप ने मेरे पुत्र श्वेतकेतु से पूछा है, कृपया उनका उत्तर हमें बतला दीजिए। गौतम की बातों को सुनकर राजा जैवलि प्रवाहण बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें अपार धन देने के लिए बोले, किन्तु ब्राह्मण तो ब्राह्मण। वास्तव में ब्राह्मण वही है जो निर्लोभी हो। और भूप भी वही कहलाने के योग्य होता है जो बिना याचना के ब्राह्मण (ब्रह्मज्ञानी) को तृप्त करें। अत: गौतम ने कहा महाराज मुझे उन्हीं प्रश्नों का उत्तर दे दीजिए मैं सब कुछ पा जाऊँगा। गौतम के कथन सुनकर राजा जैवलि ने कहा गौतम ! इस सृष्टि में पाँच प्रकार के हवन कुण्ड हैं और उनमें पांच प्रकार की अग्नि प्रज्ज्वलित है। मैं आपको पंचम प्रश्न का उत्तर दे देता हूँ। उसी में अन्य चारों प्रश्नों का भी उत्तर मिल जायगा। देखो ! द्यौ लोक एक अग्नि है। सूर्य उस अग्नि की समिधा (ईधन) के तुल्य है। उसकी किरणें ही धूम के समान हैं। दिन उस अग्नि की ज्वाला है। चन्द्रमा उसका अंगार है और नक्षत्र ही उसकी चिनगारियाँ हैं। उस द्यौ-रूप यज्ञाग्नि में देवगण (प्राकृत पदार्थ और नियम) श्रद्धा की अर्थात् जल की आहुति देते हैं। उस आहुति से राजा सोम अर्थात् वाष्प उत्पन्न होता है वही वाष्प ही सृष्टि के द्यौलोक-रूपी यज्ञ का प्रथम परिणाम है। जब अग्नि में जल पड़ता है तब वाष्प उत्पन्न होता है। अर्थात् यह प्रथम आहुति है। वाष्प से बना हुआ बादल यज्ञ की दूसरी अग्नि है। उस अग्नि की समिधा धुआँ है। विद्युत ज्वाला है। बज्र ही अंगारे हैं और गर्जन ही चिनगारियाँ हैं। अर्थात् धूम, ज्योति, सलिल और वायु के सम्मिश्रण से बादल बनता है। इस पर्जन्य (बादल) रूप यज्ञाग्नि में देवगण (प्राकृत नियम) सोम-राजा अर्थात् जलीय वाष्प की आहुति देते हैं और उस आहुति से वर्षा होती है। सृष्टि में हो रहे इस पर्जन्य-यज्ञ में जल का दूसरी आहुति में यह रूप हो जाता है। **तृतीय**- यह पृथ्वी यज्ञ की तीसरी अग्नि है। इस अग्नि में सम्वत्सर मानो समिधा है। आकाश धुआँ के समान है। रात्रि ज्वाला है। दिशाएं ही अंगार के तुल्य हैं और अवान्तर (उनके बीच की) दिशाएँ मानों चिनगारियाँ हैं। इस पृथिवी-रूप यज्ञाग्नि में मानो देवगण वर्षा की आहुति दे रहे हैं और उस आहुति से अन्न उत्पन्न होता है। सृष्टि

यज्ञ में हो रहे पृथिवी-यज्ञ जल की तीसरी आहुति में वह (अन्नरूप) हो जाता है । **चतुर्थ** - फिर देखो यह पुरुष (नर) यज्ञ की चतुर्थ अग्नि की भाँति है। इस यज्ञ में वाणी समिधा के समान है। प्राण मानों धूम है । जिह्वा ही ज्वाला है । नेत्र ही अंगारे है । कान चिनगारियों के समान हैं । इस पुरुष-रूप यज्ञाग्नि में देवगण (आत्मा और इन्द्रियाँ) अन्न की आहुति देते हैं । उस आहुति से रेतस् (वीर्य) उत्पन्न होता है । अर्थात् अन्न से वीर्य बनता है । सृष्टि-यज्ञ में हो रहे इस पुरुष-यज्ञ में जल का चतुर्थ रूप (आहुति) यह (वीर्य) हो जाता है । **पंचम** - इस सृष्टि की पंचम अग्नि नारी है। इस स्त्री-रूप यज्ञाग्नि में देवगण (पुरुष) रेतस् (वीर्य) की आहुति देते हैं । और उसके परिणाम स्वरूप गर्भ होता है । सृष्टियज्ञ में चल रहे स्त्री-यज्ञ में जल का पंचम आहुति में यह रूप है । इस प्रकार पांचवी आहुति में जेर में लिपटा हुआ गर्भ समय पर उत्पन्न होकर बोलने लगता है । फिर उत्पन्न होकर अपनी आयु भर जीता है । मर जाने बाद उसे यहाँ से अग्नियाँ ही फिर उसको निर्दिष्ट स्थान को ले जाती हैं और जहाँ से आया था फिर वहीं चला जाता है । अर्थात् जिस द्यौ लोक से आया था वहाँ ही जाता है । आवागमन बराबर लगा रहता है इसलिए वह लोक भरता नहीं । हे गौतम! जो लोग उत्पत्ति के इस क्रम को जानते हैं और जो **''निष्काम कर्मी''** श्रद्धा और तप से ईश्वर की उपासना में लीन रहते हैं वे मरणोपरान्त ज्योतिर्मयरूप की क्रमिक श्रृंखला से गुजरते हैं । प्रथम उनका रूप अर्चि (किरण) के सदृश प्रकाश मान होता है । किरण से बढ़ता हुआ दिन के समान (जिसमें असंख्य किरणें होती हैं) हो जाता है उसके उपरान्त शुक्ल पक्ष के पखवाड़े में जितना प्रकाश होता है उतने प्रकाश से वे विभासित हो जाते हैं, उससे बढकर **''उत्तरायण''** के छः मासों के समान फिर उससे बढ़कर सम्वत्सर और सम्वत्सर से बढ़कर आदित्य की महान् ज्योति के सदृश वे तेज से भरपूर हो जाते हैं । आदित्य ज्योति से वे चन्द्र ज्योति और उससे विद्युत-ज्योति को प्राप्त होते हैं । इस प्रकार प्रकाश से प्रकाश में विकसित होते हुए पुरुष का मानव से यह अमानव (देव रूप-मात्र आत्मा का निराकार रूप प्रकट होता है माया का आवरण पूर्णतः हट जाता है) रूप प्रकट होता है । फिर वही अमानव रूप अनन्य ब्रह्म-भक्तों को ब्रह्म-मार्ग का प्रदर्शन कराता है। यही **''देवयान-मार्ग''** कहलाता है । इसके विपरीत जो सकाम कर्मी गृहस्थ में ही रहकर सकाम कर्म करते हैं अर्थात् कुएं बावड़ी बनवाकर या शुभ कार्यों में धन-दान लगाकर ईश्वर की सकाम उपासना करते हैं, वे मृत्यु के उपरान्त मन्द ज्योति की क्रमिक श्रृंखला से गुजरते हैं । पहले उनका रूप **''धूम''** के समान होता है फिर धूम से बढ़कर रात्रि के समान इनकी मन्द ज्योति होती है । उससे आगे रात्रि से बढ़कर अमावस्या की रात्रि के समान ज्योतिर्विहीन हो जाते हैं पुनः उससे बढ़कर छः मासों में छः मास तक की ज्योतिष हीनता अर्थात् **''दक्षिणायन''** में पहुँच जाते हैं । परन्तु ये सकाम कर्मी उससे भी गहन अन्धकार लोक को नहीं जाते ये सकाम कर्मी कहाँ जाते हैं ?

उत्तर - दक्षिणायन से वे पितृलोक (पितृयान = पुनर्जन्म के मार्ग में) में पहुँचते हैं । वहाँ से आकाश,सोम (चन्द्र) लोक में जाकर अपने शुभ कर्मो का (इष्टापूर्त कर्मो का) = फल भोगते हैं । जब तक उनके कर्मो का फल क्षीण नहीं होता तब तक वे चन्द्र लोक में रहते हैं । तदुपरान्त जिस मार्ग से गये थे उसी को लौट आते हैं । अर्थात् आकाश,आकाश से वायवीय दशा, फिर उससे धूम दशा, धूम

से अभ्र-सदृश दशा को प्राप्त हो जाते हैं । अभ्र से मेघ और मेघ में आकर पानी के साथ बरस पड़ते हैं। बरसकर नाना प्रकार के अन्नों में किसी में जाकर पैदा होते हैं । फिर इनमें से निकलना अत्यन्त कठिन हो जाता है । फिर जो-जो प्राणी जो अन्न खाता है उसके-उसके वीर्य में जाकर उस जैसी ही सन्तान उत्पन्न होकर पैदा होते हैं । फिर तो पशु-पक्षी-कीट, पतंग, कितनी योनियों में उसे कितने काल भटकना होता है, यह कहा नहीं जा सकता, उसे मात्र ईश्वर ही जानता है । निकलना इसलिए कठिन हो जाता है कि मनुष्य योनि में आने के लिए यह आवश्यक होता है कि जीव जिस अन्न में है वह अन्न किसी मनुष्य के अन्दर जाय और उसके वीर्य से उसकी सन्तान के रूप में जन्म ले तब छुटकारा मिल सकता है । मनुष्य में भी अच्छे मनुष्य में जाय तब तो उत्तम जन के यहाँ जन्म होगा, अन्यथा नीचों के घर जन्मेंगे। अत: यदि मृत्युकाल में यहाँ से जाते समय उनका आचरण उत्तम रहा तब तो वे शीघ्र अच्छी योनि में आ जाते हैं अन्यथा पशु-पक्षी, कीट- पतंगादि योनियों में भ्रमते रहते हैं ।

वैदिक उपदेशक विद्यालय, लखनऊ

सब सज्जनों के सूचनार्थ निवेदन है कि उत्तर प्रदेश के लखनऊ नगर में 'वैदिक उपदेशक विद्यालय' स्थापित किया गया है । इसका उद्देश्य वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित प्रचारक तैयार करना है । विद्यालय में पाँच विषय पढाये जायेंगे :- १- संस्कृत व्याकरण: २- भारतीय दर्शन: ३- वेद (उपनिषद् सहित): ४- ऋषि दयानन्द : ५- योग ।

विद्यार्थियों का आवासन, अध्ययन एवं भोजन नि:शुल्क होगा: उन्हें कोई उपाधि (डिग्री) नहीं दी जाएगी: शनै:-शनै: संस्कृत को संवाद की भाषा बनाया जाएगा । प्रवेश के नियम तथा अन्य विवरण निम्न प्रकार हैं:-

१- न्यूनतम अर्हतायें :

(क) हिन्दी, अंग्रेजी अथवा संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान हो:

(ख) वर्णोच्चारण की परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी :

(ग) सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में उद्यत हो:

(घ) शरीर स्वस्थ एवं नीरोग हो:

(ड़) आयु १५ वर्ष और ३५ वर्ष के बीच हो ।

२- कार्यारम्भ: ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा, वैक्रमाब्द २०७५: बृहस्पतिवार: १४ जून, २०१८ से ।

३- सञ्चालक: आचार्य रूपचन्द्र 'दीपक'

एम. एस-सी. (गणित): एम. ए., पी-एच.डी. (दर्शन-शास्त्र):

बी. एड.: व्याकरणाचार्य: न्याय-विशारद: वेद-भूषण।

मो० - 9839181690 Email : rcdeepak@yahoo.com

४- **पता:** वैदिक उपदेशक विद्यालय: १३९३, एल्डिको उद्यान-२: रायबरेली रोड,

लखनऊ- २२६०२५

५- दूरभाष संख्या: 7376987931

दिनांक : १५ अप्रैल, २०१८

सचिव

प्रबोध आर्य

मो.: 9936827199

आर्य समाज सान्ताक्रुज का ७४ वाँ वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह

शुक्रवार दि. २६.०१.२०१८ से रविवार दि. २८ जनवरी, २०१८ तक आर्य समाज सान्ताक्रुज का ७४ वाँ वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह आर्य समाज के विशाल सभागृह में मनाया गया । इस अवसर पर ऋग्वेद के मन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञ प्रातः ८.०० बजे से १०.०० बजे तक आयोजित किया गया जिसके ब्रह्मा आचार्य पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय (नई दिल्ली) एवं वेदपाठी पं. नामदेव आर्य, पं. विनोद कुमार शास्त्री, पं. नरेन्द्र शास्त्री एवं पं. प्रभारंजन पाठक थे ।

वार्षिकोत्सव के अवसर पर 'वैदिक पुस्तक मेला' विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा जिसमें सिर्फ महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थों की प्रदर्शनी एवं उनका विक्रय किया गया ।

वर-वधू चयन सेवा का परिचय मिलन सम्मेलन हुआ जिसमें अनेक युवक युवतियों ने भाग लिया । इसका सञ्चालन श्रीमती प्रेमा मिस्त्री व श्रीमती सुधा कुमार ने किया ।

दि. २६ जनवरी २०१८ को सायं ६से ९.३० बजे तक **आर्य पुरोहित सभा मुबंइ** द्वारा वर्तमान संदर्भ मे राष्ट्रीयता विषय पर कवि सम्मेलन एवं प्रवचन का आयोजन किया गया । जिसकी सभी ने खूब सराहना की । लगभग आठ कवियों ने सुन्दर काव्य-पाठ किया, तत्पश्चात आचार्य पं. वेदप्रकाश श्रोत्रिय एवं आचार्य सत्यजीत जी के सारगर्भित प्रवचन हुए ।

दि. २७ जनवरी को मध्याह्न ३.०० से ५.३० बजे तक **''आर्य महिला सम्मेलन''** श्रीमती विद्योत्मा बांगिया (नेरूल) की अध्यक्षता में हुआ । जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती विरमी देवी अग्रवाल (वाशी), श्रीमती उर्मिल बहल (अन्धेरी), श्रीमती नंदिनी आर्य (वडाला), श्रीमती विशुद्धा आर्या (काकडवाडी) उपस्थित थीं । इस कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री (संयोजिका: आर्य महिला समाज सान्ताक्रुज) ने किया । श्रीमती सरोजनी गोयल (किग्सर्कल), श्रीमती सुषमा चौपड़ा, श्रीमतीअरुणा पटेल, श्रीमती सुधा शर्मा, श्रीमती शारदा आर्य, श्रीमती रीता गुप्ता आदि अनेक अन्य समाजों की प्रतिनिधि महिलाओं ने महिला सम्मेलन में अपने-अपने विचार व्यक्त किये । आर्य समाज सान्ताक्रुज की बहिनों द्वारा सुन्दर सुमधुर भजनों की प्रस्तुति की गयी ।

दि. २८ जनवरी २०१८ को प्रातः ८से १० तक यज्ञ की पूर्णाहुति हुई तत्पश्चात प्रातः राश के उपरान्त पुरस्कार समारोह का शुभारम्भ हुआ । मन्त्रोच्चारण एवं पुष्पवृष्टि के साथ विद्वानों का मंच पर आगमन हुआ । तत्पश्चात पुरस्कारों का विवरण महामंत्री संगीत आर्य ने प्रस्तुत किया ।

पृष्ठ २ का शेषांश.....
मीमांसा दर्शन विमर्श पर हनुमान टेम्पल ट्रस्ट, कलकत्ता ने १९७६ ई० में **'हनुमान विद्यावृति'** पुरस्कार देकर डा० उपाध्याय को सम्मानित किया। उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी ने १९७८ ई० में आपके मीमांसा दर्शन विमर्श पर आप को पुरस्कृत किया।

डा० उपाध्याय अपनी अध्यापनकला और विद्वता के कारण कई विश्वविद्यालयों में अतिथि आचार्य आदि के रूप में व्याख्यान देने और अनुसंधान-पदवी-समिति में आमन्त्रित होते रहते हैं।

डा० उपाध्याय अपनी अध्यापनकला और विद्वता के कारण कई विश्वविद्यालयों में अतिथि आचार्य आदि के रूप में व्याख्यान देने और अनुसंधान-पदवी-समिति में आमन्त्रित होते रहे हैं।

डा० वाचस्पति उपाध्याय ने १९८२ ई० में संस्कृत विद्या के विद्वान् प्राध्यापक के रूप में विदेश यात्रा की। आपने जर्मनी और स्विट्जरलैण्ड में वेद और भारतीय दर्शन पर कई गवेषणात्मक व्याख्यान दिये। उत्तर प्रदेश के गवर्नर महोदय ने डा० उपाध्याय को मेरठ विश्वविद्यालय में संस्कृत का विशेषज्ञ नियुक्त किया। भारतवर्ष के अनेक विश्वविद्यालयों में- मद्रास और तिरूपति से लेकर उज्जैन, कुरुक्षेत्र, चण्डीगढ, सागर, गोरखपुर आदि में भारतीय दर्शन पर व्याख्यान देने के लिए आमन्त्रित हुए।

डा० उपाध्याय का सम्पूर्ण परिवार विद्वान पुरोहितों की हैसियत से आर्यसमाज की सेवा में लगा हुआ है। डा० उपाध्याय के पिताजी आचार्य रमाकान्त शास्त्री आर्यसमाज कलकत्ता के आचार्य में होनेवाली सम्पूर्ण गतिविधियों के प्राणस्वरुप थे। आपके पितृव्य प्रो० उमाकान्त उपाध्याय एवं प्रो० श्रीकान्त उपाध्याय, श्री शिवाकान्त उपाध्याय कलकत्ता और दिल्ली में आर्यसमाज की सेवा में समर्पित रहे। डा० वाचस्पति स्वयं विश्वविद्यालय की सम्पूर्ण व्यवस्थाओं के साथ आर्यसमाज की सेवा में बड़ी श्रद्धा एवं लगन से रुचि लेते थे। डा० उपाध्याय ने अपने बीसों नवयुवक विद्यार्थियों को दिल्ली विश्वविद्यालय से एम०-ए० की परीक्षा पास करा दिल्ली में आर्यसमाज के प्रचार एवं पौरोहित्य कार्य में संलग्न करने का यश प्राप्त किया है। डा० उपाध्याय स्वयं आर्यसमाज के निष्ठावान् मनीषी एवं विचारशील विद्वान् थे।

आर्यसमाज कलकत्ता डा० उपाध्याय की निर्माणस्थली है। आर्यसमाज कलकत्ता के साथ उनके विद्यार्थी जीवन की बहुत सारी मधुर स्मृतियाँ संलग्न हैं। डा० उपाध्याय ने यहीं वेद का पाठ - स्वाध्याय का आरम्भ किया था। आर्यसमाज कलकत्ता की छत्रछाया में और अपने आदर्श प्रचारक पिताजी के निर्देश में यहीं डा० उपाध्याय ने व्याख्यान मंचों को सुशोभित करना सीखा था। आर्यसमाज कलकत्ता अपने इस प्रकार के ख्यातिप्राप्त विद्वान पर हर्ष एवं गर्व का अनुभव करता है।

दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाते हुए आप असिस्टेंट प्रोफेसर और फिर प्रोफेसर की पदवी से विभूषित हुए। प्रो० उपाध्याय दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष बने और अध्यापन एवम् कुशल प्रशासन से बड़ी प्रतिष्ठा अर्जित की।

सन् १९९४ में आपको श्री लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) का कुलपति नियुक्त किया गया। आपकी प्रशासनिक कुशलता, कर्त्तव्यनिष्ठा, कर्मठता, व्यवहार कुशलता और विश्वविद्यालय एवं संस्कृत के प्रति एकनिष्ठ समर्पण का सुफल यह हुआ कि ५ वषो के लिए मिला यह कार्यभार निरन्तर १७ वषा तक आपके पास ही रहा। **शेषांश पृष्ठ २१ पर.....**

आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ

आर्य स्त्री समाज कलकत्ता द्वारा वेद कथा का आयोजन

आर्य स्त्री समाज कलकत्ता के तत्वावधान मे विगत चार-पाँच वर्षो से पञ्च दिवसीय आध्यात्मिक सत्संग का आयोजन किया जा रहा है । इसी कड़ी में इस वर्ष भी ११ अप्रैल से १५ अप्रैल २०१८ पर्यन्त वेद-कथा का आयोजन किया गया । यह कार्यक्रम प्रतिदिन अपराह्न ३ बजे से ५ बजे तक भरतपुर (राजस्थान) से समागत वैदिक विद्वान् आचार्य देशराज जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम को दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटित किया आर्य समाज कलकत्ता द्वारा संचालित आर्य कन्या महाविद्यालय की टीचर-इन-चार्ज श्रीमती लिपिका आदित्य जी ने । इस अवसर पर मुख्य-अतिथि के रूप में कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष श्रीमती राजश्री शुक्ला जी उपस्थित थीं । आचार्य देशराज जी ने अत्यन्त सरल व सरस रूप में वैदिक सिद्धान्तों की व्याख्या की तथा पारिवारिक जीवन में उपयोगी वैदिक विचारों को आत्मसात् करने की प्रेरणा दी । आचार्य देशराज जी के व्याख्यान के साथ उनके साथ समागत भजनोपदेशक द्वारा प्रस्तुत भजन कार्यक्रम को रोचक बना रहे थे । आर्य स्त्री समाज की सदस्याओं नें कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण मनोयोग से कार्य किया। कार्यक्रम में अच्छी संख्या मे महिलाओं की उपस्थिति से कार्यक्रम पूर्ण सफल रहा । इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रधाना श्रीमती सुशीला दम्मानी, मन्त्रिणी श्रीमती सत्यवती जायसवाल सहित आर्य स्त्री समाज की सभी सदस्यायें सक्रिय रही ।

प्रसिद्ध समाजसेवी और महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त श्री खुशहाल चन्द्र आर्य जी का अभिनन्दन

महर्षि दयानन्द गुरुकुल और आर्य समाज मालिग्राम, पश्चिम मेदनीपुर का वार्षिकोत्सव विगत २३ मार्च से २५ मार्च तक बड़े ही धूम-धाम, उत्साह और उमंग के साथ सुसम्पन्न हुआ । इस उत्सव में बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान् और आर्यसमाज के नेतागण तथा विभिन्न ग्रामवासियों ने भाग लिया । इस अवसर पर आर्यसमाज के अनन्य भक्त, सेवा पारायण, ऋषि दयानन्द के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले, वैदिक धर्म-ध्वाज के संवाहक, वैदिक सिद्धान्तों एवं विचारों के प्रचार व प्रसार में निरत, सुप्रसिद्ध लेखक एवं कवि तथा आर्य समाज बड़ाबाजार (कोलकाता) के पूर्व प्रधान श्री खुशहाल चन्द्र आर्य जी का सार्वजनिक अभिनन्दन दिनांक २५/३/२०१८ को किया गया । श्री खुशहाल चन्द्र आर्य जी को महर्षि दयानन्द गुरूकुल, मालिग्राम पश्चिम मेदिनीपुर का प्रधान मनोनीत किया गया ।

आर्य समाज कलकत्ता के प्रकाशन

पुस्तक विक्रेता, आर्य संस्थाओं, उपदेशकों को ४० प्रतिशत की छूट दी जाती है।

पुस्तक का नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
१. युग निर्माता सत्यार्थ प्रकाश-संदर्भ दर्पण (ऐतिहासिक संदर्भ में सत्यार्थ प्रकाश की यात्रा का दस्तावेज)	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	७०.००
२. स्वामी दयानन्द का राजनीति दर्शन (स्वामी दयानन्द के राजनीत दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन)	डॉ० लाल साहेब सिंह	५०.००
३. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज की देन (उन्नीस उत्कृष्ट निबंधों का संग्रह)	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय द्वारा सम्पादित	१५.००
४. त्रैतवाद का उद्भव और विकास (त्रैतवाद का उसके उद्भव और विकास के वैशिष्ट्य को स्पष्ट करने वाला दर्शन का शोधपूर्ण ग्रंथ)	डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री	२०.००
५. उपनिषद् रहस्य (ईश केन और प्रश्न उपनिषदों की सारगर्भित व्याख्या)	महात्मा नारायण स्वामी ''सरस्वती''	२०.००
६. श्री श्री दयानन्द चरित	श्री सत्यबन्धुदास	१०.००
७. महर्षि दयानन्द की देन (निबन्धों का संग्रह)	आर्यसमाज कलकत्ता द्वारा प्रकाशित	३०.००
८. धर्मवीर पं० लेखराम	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती	५०.००
९. आनन्द संग्रह (स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज के उपदेशामृत)	वीतराग स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज	२५.००
१०. भाई परमानन्द (बलिदानी वंश के कुलदीपक की अमर कहानी)	श्री बनारसी सिंह	१०.००
११. धर्म का आदि स्त्रोत	पं० गंगाप्रसाद जी	३०.००
१२. संकल्प सिद्धि (विचारों के संकल्प विकल्प का अनोखा चिन्तन)	स्वामी ज्ञानाश्रम	३०.००
१३. ज्योतिर्मय (श्रीयुत् टी. एल. वास्वानी द्वारा लिखित (Torch Bearer)) का हिन्दी अनुवाद	टी॰एल॰ वास्वानी	३०.००
१४. वेद-वैभव	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१५०.००
१५. कर्मकाण्ड	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१०.००
१६. स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का योगदान	ले० सत्यप्रिय शास्त्री	५०.००
१७. आर्यसमाज कलकत्ता का इतिहास	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	८०.००
१८. मेरे पिता	इन्द्र विद्यावाचस्पति	५०.००
१९. वेद और स्वामी दयानन्द	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	४०.००
२०. व्यतीत के यश की धरोहर (महासम्मेलनों के संस्मरणात्मक आकलन)	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	६०.००
२१. Torch Bearer	टी० एल० वास्वानी	३५.००
२२. पं० गुरुदत्त लेखावली	मुनि[illegible] विद्यार्थी	[illegible]
२३. प्रार्थना प्रवचन	प्रो० [illegible]ाय	५०.[illegible]
२४. सन्ध्यारहस्य एवं संन्ध्या अष्टांग योग	प्रो० चमूपात एव स्व० आत्मानन्द (एक जिल्द)	३०.००
२५. बंगाल शास्त्रार्थ	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	४०.००
२६. वेद में गोरक्षा या गोवध	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	५.००
२७. वेद रहस्य	महात्मा नारायण स्वामी जी	३५.००
२८. वेद वन्दन	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१६०.००
२९. राज प्रजाधर्म प्रबोधभाष्य	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	७०.००
३०. वेद-वीथिका	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१६०.००

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता - ६ के लिए श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल द्वारा प्रकाशित
तथा एशोशियेटेड आर्ट प्रिण्टर्स, ७/२, विडन रो, कोलकाता-६ में मुद्रित । मो. : ९८३०३७०४६३